❍ 14 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *योगबल से माया पर विजय प्राप्त की ?*

➢➢ *अन्नदोष से समभाल की ?*

➢➢ *संगमयुग के महत्व को जान स्नेह की अनुभूतियो में समाये रहे ?*

➢➢ *व्यर्थ की फीलिंग से परे रहे ?*

————————————————————

✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚

〰✧ ब्राह्मण संगठन का आधार आत्मिक प्यार है। चलते-फिरते आत्मिक प्यार की वृत्ति, बोल, सम्बन्ध - सम्पर्क अर्थात् कर्म हो। *ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर मास्टर प्रेम का सागर है। इसी नेचर को धारण करो।*

✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚ ••☆••✧ ˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं सफलतामूर्त आत्मा हूँ"*

〰✧ *सदा सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इतना नशा रहता है? सफलता होगी या नहीं होगी यह क्वेशचन ही नहीं। सफलता मूर्त हैं ऐसे नशा रहता है? मास्टर शिक्षक हो ना।* जैसे बाप शिक्षक की क्वालीफिकेशन है, वैसे मास्टर शिक्षक की भी होगी ना। बाप समान बने हो ना? (हाँ) यह हाँ-हाँ के गीत अच्छा गाती हैं। इससे सिद्ध है कि यह बाप के गुण सभी को सुनाकर डाँस करती कराती हैं।

〰✧ *कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होती हैं। क्योंकि कुमार और कुमारियाँ, त्याग कर तपस्वी आकर बने हैं।* बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं। बाप की महिमा तो भक्त करते हैं लेकिन बच्चों की महिमा बाप करते हैं। कितने जन्म आपने माला सिमरण की? अभी बाप रिर्टन में बच्चों की माला सिमरण करते हैं। आप लोग देखते हो किस समय बाप माला सिमरण करते हैं? (अमृतबेले) तो जिस समय बाप माला सिमरण करते उस समय आप सो तो नहीं जाते हो? शक्तियाँ तो सोने वालो को जागने वाली है। खुद कैसे सोयेंगी?

〰✧ रिजल्ट श्रेष्ठ स्मृति और ईश्वरीय स्वमान 76 अच्छी है। सर्टीफिकेट मिलना भी लक है। आस्ट्रेलिया वालों को अच्छा सार्टीफिकेट मिल रहा है। *अपनी फुलवाड़ी को निश्चय और हिम्मत के जल से सींचते रहने से वृद्धि को पाते रहेंगे। वृद्धि होती रहेगी।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ कर्मातीत का अर्थ ही है हर सबजेक्ट में फुल पास। 75 परसेन्ट, 90 परसेन्ट भी नहीं, फुल पास। यह अवस्था तब आयेगी जब अपने अनुभव में सर्व शक्तियों का स्टॉक प्रैक्टिकल में यूज में आवे।
पहले भी सुनाया - *सर्वशक्तियाँ बाप ने दी, आपने ली लेकिन समय पर यूज होती हैं या नहीं, सिर्फ स्टॉक ही है!*

〰✧ सिर्फ स्टॉक है लेकिन समय पर यूज नहीं हुआ तो होना या न होना एक ही बात है। यह अनुभव करो परिस्थिति बहुत नाजुक है लेकिन *ऑर्डर दिया मन-बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी।* सामना नहीं करेगी।

〰✧ आसन नहीं छोडो, *आसन में बैठने का अभ्यास ही सिंहासन प्राप्त करायेगा।* अगर आसन पर बैठना नहीं आता है, कभी-कभी बैठना आता है तो सिंहासन में भी कभी-कभी बैठेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *महारथी बच्चों को वर्तमान समय कौन-सा पोतामेल रखना है? अभी महारथियों की सीज़न है सिद्धि स्वरूप बनने की। उनके हर बोल और संकल्प सिद्ध हों। वह तब होंगे जब उनका हर बोल और हर संकल्प ड्रामा अनुसार सत् और समर्थ हो। तो महारथी अब यह पोतामेल रखें कि सारे दिन में जो उनके संकल्प चलते हैं या मुख से जो बोल निकलते हैं वह कितने सिद्ध होते हैं।* संकल्प है बीज। जो समर्थ बीज होगा उसका फल अच्छा निकलता है। उसको कहेंगे संकल्प सिद्ध होना। तो सारे दिन में कितने संकल्प और बोल सिद्ध होते हैं? जो बोला ड्रामा अनुसार वही बोला और जो होना है वही बोला। इसमें हर बोल और संकल्प को समर्थ बनाने में अटेन्शन रखना पड़े। तो महाराथियों का पोतामेल अब यह होना चाहिए। *जैसे भक्ति में भी कहा जाता है कि यह सिद्ध-पुरुष है। तो यहाँ भी जिसका संकल्प और बोल सिद्ध होता है तो उस सिद्धि के आधार पर वह प्रसिद्ध बनता है। अगर सिद्ध नहीं तो प्रसिद्ध नहीं। भक्ति में कई देवियाँ व देवतायें प्रसिद्ध होते हैं, कई प्रसिद्ध नहीं होते। वे देवता व देवी तो माने जाते हैं लेकिन प्रसिद्ध नहीं होते। तो संकल्प और बोल सिद्ध होना यह आधार है प्रसिद्ध होने का।* इससे ऑटोमेटिकली अव्यक्त फ़रिश्ता बन जायेंगे और समय बच जायेगा। वाणी में आना ऑटोमेटिकली समाप्त हो जायेगा क्योंकि साइलेन्स-होम अथवा शान्तिधाम में जाना है ना? तो वह साइलेन्स के व आकारी फ़रिश्तेपन के संस्कार अपनी तरफ़ खींचेंगे। *सर्विस भी इतनी बढ़ती जायेगी कि जो वाणी द्वारा सेवा करने का चॉन्स ही नहीं मिलेगा। जरूर नैनों दवारा और अपने मस्कराते हए मख दवारा. मस्तक में

चमकती हुई मणि द्वारा सेवा कर सकेंगे। वह अभ्यास तब बढ़ेगा जब यह पोतामेल रखेंगे।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- त्रिकालदर्शी बनना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मधुबन पहाड़ी पर बैठ स्वदर्शन चक्र फिरा रही हूँ... चक्र फिराते-फिराते अपने सभी स्वरूपों में खो जाती हूँ... कलयुगी अज्ञानता के अंधकार में सोई हुई मुझ आत्मा को परमात्मा ने ज्ञान के चक्षु देकर त्रिनेत्री बना दिया... सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर बुद्धिवान बना दिया...* पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बना दिया... मीठे बाबा को स्मृतियों में लाते ही तुरंत बाबा सामने हाजिर हो जाते हैं और मेरे बाजू में बैठ सिर पर प्यार से हाथ फिराते हुए कहते हैं...

❉ *ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर मेरी आत्म ज्योति को जगाते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... शरीर नही खुबसूरत मणि हो सदा अपने अविनाशी स्वरूप के नशे में रहो... *ज्ञान के तीसरे नेत्र से सदा दमकते स्वरूप आत्मा पर ही नजर डालो...* शरीर के भ्रम से निकल कर सदा अपने सत्य चमकते स्वरूप को ही निहारो... अपने सच्चे वजूद और सत्य पिता को ही हर पल यादो में बसाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा दिव्य चक्षुओं से तीनों कालों का ज्ञान पाकर दिव्यता से सजते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा ज्ञान के तीसरे नेत्र से पूरे विश्व को मणियो से दमकता हुआ निहार रही हूँ... मीठे बाबा के सारे खुबसूरत सितारे धरा पर जगमगा रहे है... *प्यारे बाबा आपने ज्ञान के तीसरे नेत्र से मुझे त्रिकालदर्शी बना कर... मेरी दुनिया कितनी खुबसूरत प्यारी बना दी है..."*

❇ *मीठा बाबा सभी खजानों से भरपूर कर मुझे मालामाल करते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *ज्ञान के तीसरे नेत्र से सदा मीठे बाबा को निहारते रहो और बाबा की सारी शक्तियाँ अथाह खजानो से स्वयं को भरपूर करते रहो...* सारी ईश्वरीय खानो पर अपना नाम लिख डालो... यह ईश्वर पिता के मीठे साथ का,भाग्य बनाने का खुबसूरत समय... स्वयं को मात्र शरीर समझ हाथ से यूँ जाने न दो..."

➳ _ ➳ *मीठे बाबा के यादों में समाकर सर्व शक्तियों की अधिकारी बन मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपकी मीठी यादो में खोयी हूँ... मेरा रोम रोम आँखे बन गया है.. *और हर पल हर साँस से आपको ही निहार रही हूँ... मै आत्मा अनन्त शक्तियो से भरती जा रही हूँ...* और बस एक के ही रंग में रंगी सी हूँ... मीठा बाबा ही मेरी यादो में समाया है..."

❇ *मेरे मनमीत बाबा अपनी बाँहों के झूले में झुलाते हुए सत्यता की राह दिखाते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *अपने खुबसूरत स्वरूप और सच्चे पिता की यादो में खो जाओ... देह की दुनिया से निकल अपने अविनाशी आत्मा और शिव पिता की मीठी यादो में स्थिर हो जाओ...* शरीर होने के भान से परे होकर चमकते ओजस्वी स्वरूप के नशे से भर जाओ... और सच्चे पिता को यादकर उसकी प्यारी सी बाँहों में स्नेह से झूल जाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा ज्ञान अंजन लगाकर खुशियों के बगिया में मुस्कुराते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा शरीर के मायाजाल से मुक्त होकर आपकी प्यार भरी बातो में यादो में खो गई हूँ... आपके सच्चे प्यार को पाकर

जीवन कितना मीठा खुशियो भरा हो गया है... *चारो ओर सुख और खुशियो के फूल खिल उठे है... जीवन प्रेम और शांति का पर्याय बन महक उठा है..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- श्रीमत पर ज्ञान और योगबल से माया पर विजय पानी है*"

➳ _ ➳ सारे विश्व पर जीत पहनने वाली माया के ऊपर जीत पहन मायाजीत जगतजीत बनने के लिए अपने समर्थ उस्ताद की सुमत पर सदा चलने की स्वयं से मैं प्रतिज्ञा करती हूँ और मन ही मन विचार करती हूँ कि माया ने कैसे सभी को भ्रम में डाल कर उलझा रखा है! *आज सारी दुनिया माया के धोखे में आकर कैसे उसकी मुरीद बन गई है! माया ने सबकी आंखों पर ऐसी पट्टी बांध दी है कि मनुष्य सही और गलत की पहचान करना ही भूल गए हैं*। किन्तु कितनी महान भाग्यवान हूँ मै आत्मा जो स्वयं भगवान समर्थ उस्ताद के रूप में मुझे मिले है और अपनी श्रेष्ठ मत द्वारा मुझे माया के चंगुल से छूटने का सहज उपाय बता रहें हैं।

➳ _ ➳ अपने समर्थ उस्ताद से उनकी सुमत पर चल मायाजीत बनने का मैं प्रोमिस करती हूँ और अंतर्मुखी होकर, बड़ी सूक्ष्म रीति अपनी चेकिंग करती हूँ कि माया कौन - कौन से रॉयल रूप धारण करके मेरे पुरुषार्थ में बाधा डालने का प्रयास करती है। *अपनी महीन चेकिंग करते हुए मैं अनुभव करती हूँ कि माया के हर वार से स्वयं को बचाने का शक्तिशाली शस्त्र एक ही है और वो है मेरे उस्ताद की सुमत जो अमृतवेले से लेकर रात्रि सोने तक मेरे उस्ताद ने मुझे दी है*। और इसलिए अब कदम - कदम अपने उस्ताद की सुमत पर चलते हुए मुझे माया पर जीत पाने का पुरुषार्थ कर जगतजीत बनना है।

➳ ➳ इसी दृढ संकल्प के साथ माया को पहचानने और उसे परखने की

शक्ति स्वयं में धारण करने के लिए अपने सर्वशक्तिवान उस्ताद की याद में मैं अपने मन और बुद्धि को स्थिर करती हूँ और *अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप को धारण कर चल पड़ती हूँ उनके पास। देह और देह की दुनिया के हर बन्धन से मुक्त होकर मैं आत्मा ऊपर की और उड़ रही हूँ*। इस निर्बन्धन स्थिति में स्वयं को एक दम हल्का अनुभव करते हुए मैं आत्मा गहन आनन्द की अनुभूति कर रही हूँ।

➳ _ ➳ ज्ञान और योग के अपने खूबसूरत पँखो को फैला कर एक आजाद पंछी की भांति उड़ने का भरपूर आनन्द लेते - लेते मैं आकाश को पार कर, फरिश्तो की दुनिया से होती हुई लाल प्रकाश की एक अति सुंदर दुनिया मे प्रवेश करती हूँ। *चमकते हुए चैतन्य सितारों की निराकारी दुनिया अपने पिता परमात्मा के परमधाम घर मे अब मैं स्वयं को अपने निराकार शिव पिता के सामने देख रही हूँ। उनकी सर्वशक्तियों की किरणों की छत्रछाया के नीचे बैठ शांति, सुख, प्रेम, आनन्द की अनुभूति करते हुए गहन अतीन्द्रिय सुख में मैं डूबती जा रही हूँ*। मेरे सर्वशक्तिवान शिव पिता के स्नेह की शीतल छाया और उनकी सर्वशक्तियाँ मुझे मायाजीत बनाने के लिए मेरी सोई हुई शक्तियों को जागृत कर मुझे शक्तिशाली बना रही हैं।

➳ _ ➳ 63 जन्मों तक माया के जाल में फँस कर, अपनी शक्तियों को भूलने के कारण, दुखी होने की जो पीड़ा मैं सहन कर रही थी, वो पीड़ा अपने प्यारे पिता का स्नेह पाकर समाप्त हो गई है और मैं फिर से स्वयं को शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करने लगी हूँ। *सर्वशक्तिसम्पन्न बनकर अब मैं माया पर जीत पाने के लिए फिर से साकार सृष्टि रूपी माया की नगरी में लौट रही हूँ। अपने साकार तन का आधार लेकर मैं फिर से इस माया नगरी में अपना पार्ट बजा रही हूँ लेकिन सर्वशक्तिवान समर्थ उस्ताद को सदा अपने साथ कम्बाइंड रखकर अब मैं कदम - कदम उनकी सुमत पर चल माया के हर वार को पहचान कर, निडर होकर उसका सामना कर रही हूँ*। मेरे समर्थ उस्ताद की सर्वशक्तियों की छत्रछाया सेफ्टी का किला बन कर मुझे माया के जाल में फंसने से बचाकर मायाजीत जगतजीत बना रही है।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं संगमयुग के महत्व को जान स्नेह की अनुभूतियों में समाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सम्पूर्ण ज्ञानी आत्मा हूँ।*
✺ *मैं योगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

_____

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव व्यर्थ की फीलिंग से परे रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा मायाजीत हूँ ।*
✺ *मैं सदा समर्थ आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

_____

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ ➳ 1. एक बात बापदादा ने मैजारिटी में देखी है। मैनारिटी नहीं

मैजारिटी। क्या देखा? जब कोई सरकमस्टांश सामने आता है तो मैजारिटी में एक, दो, तीन नम्बर में क्रोध का अंश न चाहते भी इमर्ज हो जाता है। कोई में महान क्रोध के रूप में होता, कोई में जोश के रूप में होता, कोई में तीसरा नम्बर चिड़चिड़ेपन रूप में होता है। चिड़चिड़ापन समझते हो? वह भी है क्रोध का ही अंश, हल्का है। तीसरा नम्बर है ना तो वह हल्का है। पहला जोर से है, दूसरा उससे थोड़ा। फिर भाषा तो आजकल सबकी रायल हो गई है। तो रायल रूप में क्या कहते हैं? बात ही ऐसी है ना, जोश तो आयेगा ही। तो *आज बापदादा सभी से यह गिफ्ट लेने चाहते हैं कि क्रोध तो छोड़ो लेकिन क्रोध का अंश मात्र भी नहीं रहे।* क्यों? क्रोध में आकर डिस-सर्विस करते हैं क्योंकि क्रोध होता है दो के बीच में। अकेला नहीं होता है, दो के बीच में होता है तो दिखाई देता है। चाहे मन्सा में भी किसके प्रति घृणा भाव का अंश भी होता है तो मन में भी उस आत्मा के प्रति जोश जरूर आता है। तो बापदादा को यह डिस-सर्विस का कारण अच्छा नहीं लगता है। तो क्रोध का भाव अंश मात्र भी उत्पन्न न हो। जैसे ब्रह्मचर्य के ऊपर अटेन्शन देते हो, ऐसे ही काम महाशत्रु, क्रोध महाशत्रु गाया हुआ है। शुभ भाव, प्रेम भाव वह इमर्ज नहीं होता है। फिर मूड आफ कर देंगे। उस आत्मा से किनारा कर देंगे। सामने नहीं आयेंगे, बात नहीं करेंगे। उसकी बातों को ठुकरायेंगे। आगे बढ़ने नहीं देंगे। यह सब मालूम बाहर वालों को भी पड़ता है फिर भले कह देते हैं, आज इसकी तबियत ठीक नहीं है, बाकी कुछ नहीं है। *तो क्या जन्म-दिवस की यह गिफ्ट दे सकते हो?*

➳ _ ➳ 2. *सच्ची दिल पर भी साहेब राजी होता है।*

➳ _ ➳ 3. जो समझते हैं कि हम दो तीन मास में कोशिश करके छोड़ेंगे वह बैठ जाओ। और जो समझते हैं 6 मास चाहिए, अगर 6 मास पूरा लेंगे भी तो कम करना, इस बात को छोड़ना नहीं क्योंकि यह बहुत जरूरी है। यह डिससर्विस दिखाई देती है। मुख से नहीं बोलो, शक्ल बोलती है। इसलिए *जिन्होंने हिम्मत रखी है उन सब पर बापदादा ज्ञान, प्रेम, सुख, शान्ति के मोतियों की वर्षा कर रहे हैं।* अच्छा।

➳ _ ➳ 4. बापदादा रिटर्न सौगात में यह विशेष सभी को वरदान दे रहे हैं - *जब भी गलती से भी, न चाहते हुए भी कभी क्रोध आ भी जाए तो सिर्फ

दिल से 'मीठा बाबा' शब्द कहना, तो बाप की एक्स्ट्रा मदद हिम्मत वालों को अवश्य मिलती रहेगी। मीठा बाबा कहना, सिर्फ बाबा नहीं कहना, *'मीठा बाबा' तो मदद मिलेगी, जरूर मिलेगी* क्योंकि लक्ष्य रखा है ना। तो लक्ष्य से लक्षण आने ही हैं।

✺ *ड्रिल :- "क्रोध को अंश सहित बापदादा को गिफ्ट में देना"*

➳ _ ➳ मैं ज्योति बिंदु स्वरूप आत्मा अपना फरिश्ता रूप धर कर बाबा से मिलन मनाने सूक्ष्म वतन जा रही हूं... जहाँ मेरे मीठे बाबा मेरे ही इन्तजार में बैठे हुए हैं... *चारों ओर सफेद चमकीले प्रकाश की आभा बिखेरते हुए बाबा अपने कोमल हाथों से मुझे अपने पास में बिठाते हैं...* बाबा अपनी मीठी दृष्टि देते हुए अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रखते हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा कई जन्मों से आसुरी कर्म कर आसुरी संस्कार धारण करने की आदत डाल ली थी... इसको अपना नैचुरल संस्कार बना ली थी... मै आत्मा बाबा को उनके जन्मदिवस पर अपनी क्रोध, जोश, चिड़चिड़ापन रूपी कमी कमजोरियों का गिफ्ट दे रही हूं... मुझ आत्मा की सरल भाव से हिम्मत रखते देख बाबा मुस्कुरा रहे है... बाबा के वरदानी हाथों के कोमल स्पर्श से *सभी अवगुणों, कमी-कमजोरियों, क्रोध, चिड़चिड़ापन इत्यादि विकारों से मुक्त होकर मैं आत्मा शुद्ध व हलकी हो रही हूँ...*

➳ _ ➳ *बाबा की मीठी दृष्टि मुझ आत्मा में खुशी का रस घोल रही है... मैं आत्मा अपने मन से घृणा भाव को मिटाते हुए बाप समान मीठी बन रही हूँ...* मुझ आत्मा के क्रोध व घृणा के पुराने स्वभाव-संस्कार बाहर निकल रहे हैं... बाबा के हाथों से दिव्य गुण व शक्तियां निकलकर मुझ फरिश्ते में प्रवाहित हो रहे हैं... मुझ आत्मा के क्रोधवश साथी आत्माओ से किनारा कर लेने के आसुरी अवगुण भस्म हो रहे हैं... मैं आत्मा दिव्य गुणों को खुद में समा कर सभी के प्रति शुभ भाव, प्रेम भाव को धारण कर सम्पन्न अवस्था का अनुभव कर रही हूँ... *मैं आत्मा स्वयं को परिवर्तित कर रही हूँ... मैं आत्मा क्रोध, चिड़चिड़ापन, साथी आत्माओ से किनारा कर लेने रूपी कलियुगी संस्कार से मक्त हो रही हूँ...* मैं आत्मा हर परिस्थिति में अपनी धारणा में परिपक्व हो

रही हूँ...

➳ _ ➳ *बाबा सर्व वरदानों से मुझे भरपूर कर रहे हैं... मैं आत्मा विकारों से मुक्त होकर सर्व खजानों से सम्पन्न हो रही हूँ...* मैं आत्मा बाबा से हर पल मीठा बने रहने का वायदा करती हूं और दिल से मीठा बाबा कहते स्थूल वतन लौट आती हूं, नीचे आकर सभी आत्माओ को मीठी दृष्टि दे रही हूं, सभी के प्रति शुभ भाव व प्रेम भाव रखते हुए *इस कर्म भूमि में विश्व कल्याणकारी बन विश्व की निःस्वार्थ सेवा कर रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔